University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme in Arts (Hindi Literature)

I& II Semester

Examination-2024-25

As per NEP – 2020

Dy. Registrar

बी.ए. ~~पासकोर्स~~ – प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र – आदिकाव्य एवं भक्तिकाव्य

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को आदिकाल और भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आदिकालीन और भक्तिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. भक्तिकालीन साहित्य और भक्ति आन्दोलन की अवधारणा स्पष्ट करना। 5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. आदिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. आदिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. भक्तिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। 4. प्रमुख भक्त कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

- आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- आदिकालीन साहित्य की अन्तरधाराएँ (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं रासो साहित्य)
- भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- भक्तिकाव्य की प्रमुख अन्तरधाराएँ (संतकाव्य, सूफीकाव्य, कृष्ण काव्य एवं राम काव्य)

इकाई – 2

ढोला मारू रा दूहा – संपादक नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, राम सिंह
दोहा संख्या – 8,9,10,19,20,21,37,38,40,49,52,61,69,112,116 = 15

विद्यापति – विद्यापति, संपादक – शिवप्रसाद सिंह
नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे (8)
सुन रसिया अब न बजाऊ बिपिन बँसिया (9)
देख देख राधा रूप अपार (10)
चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)
विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)
कुंज भवन से चलि भेलि हे रोकल गिरधारी (36)
सखि हे कतहु न देखि मधाई (55)
सखि हे कि-पुछसि अनुभव मोय (102)

नरपति नाल्ह – बीसलदेव रास, संपादक – माता प्रसाद गुप्त – 1,3,4,6,7,8,9,10

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई – 3

कबीरदास – कबीर ग्रंथावली, संपादक – श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ – पुरुषोत्तम अग्रवाल

साखी – चेतावनी को अंग
मन को अंग

पद –
- मन रे जागत रहिये भाई (राग गौड़ी – 23)
- पांडे कौन कुमति तोहि लागी (राग गौड़ी – 39)
- हम न मरैं मरिहैं संसारा (राग गौड़ी – 43)
- काहे री नलिनी तू कुमिलानी (राग गौड़ी – 64)
- मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई (राग गौड़ी – 122)

जायसी – जायसी ग्रंथावली, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल
सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक
नागमति वियोग खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक

तुलसीदास – विनय–पत्रिका
केसव! कहि न जाइ का कहिये (111)
मन पछितैहै अवसर बीते (198)
मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो (245)
श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड) (दोहा संख्या 229 से 234)
सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ..... निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

इकाई – 4

सूरदास – भ्रमरगीत सार, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल
हमारे हरि हारिल की लकरी (52)
निर्गुन कौन देस को बासी (64)
बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं (85)
उर में माखन चोर गड़े (95)
ऊधो मन नाहीं दस–बीस (210)
ऊधो भली करी अब आए (220)
देखियत कालिंदी अति कारी (278)
सँदेसो देवकी सों कहियो (375)

मीरां – मीरां पदावली, संपादक – शंभुसिंह मनोहर
निपट बंकट छवि नैना अटके (6)
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई (10)
मैं तो गिरधर के घर जाऊँ (12)
राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी (22)
मीरां मगन भई हरि के गुण गाय (23)
जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट(25)
हरि बिन कूँण गती मेरी (38)
सखी री! मेरी नींद नसानी हो (56)

रसखान – रसखान रचनावली, संपादक – विद्यानिवास मिश्र
पद संख्या – 1,2,6,8,11,14,15,31

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- आदिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- आदिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- भक्ति के उदय संबंधी विभिन्न मत
- भक्ति के निर्गुण और सगुण रूपों में समानता एवं अंतर
- निर्गुण पंथ और कबीरदास
- 'श्रीरामचरितमानस' का महत्त्व
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन
- सूफी मत की विशेषताएँ
- रसखान का कृष्ण–प्रेम
- मीरा की विरह–वेदना

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका– रामपूजन तिवारी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए. ~~मास्टर्स~~ – द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)
प्रश्नपत्र – कहानी एवं उपन्यास

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना। 2. कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना। 3. प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना। 4. कहानी तथा उपन्यास कला को विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा। 2. कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा। 3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे। 4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 एवं इकाई 3 में निर्धारित पाठ से एक–एक अवतरण (एक कहानी से एक) तथा इकाई 4 से दो अवतरण (उपन्यास) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

कहानी – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी कहानी – उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण
उपन्यास – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी उपन्यास – उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण

इकाई – 2

उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात	–	प्रेमचन्द
आकाशदीप	–	जयशंकर प्रसाद
परदा	–	यशपाल

Rj | Jay
Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई – 3

राजा निरबंसिया	–	कमलेश्वर
गदल	–	रांगेय राघव
सिक्का बदल गया	–	कृष्णा सोबती
तिरिछ	–	उदय प्रकाश

इकाई – 4

ग्लोबल गाँव के देवता – रणेन्द्र (उपन्यास)

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- कहानी एवं उपन्यास के स्वरूप में समानता एवं अंतर
- हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन – नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी
- प्रेमचन्द की कहानी कला
- पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प–विधान
- उपन्यास के प्रकार (सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक)
- हिन्दी उपन्यास : विकास के चरण
- हिन्दी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्व

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. ग्लोबल गांव के देवता – रणेन्द्र
2. मानसरोवर भाग–1 – प्रेमचन्द
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. कहानी : नई कहानी– नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. कहानी की रचना प्रकिया– परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme in Arts)

(Hindi Literature)

III& IV Semester

Examination-2024-25

As per NEP – 2020

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
Jaipur

बी.ए. – तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र – रीतिकाव्य

1 क्रेडिट –25 अंक
6 क्रेडिट–150 अंक
प्रश्न प्रत्र –120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. विद्यार्थियों को रीतिकाल की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. रीतिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. रीतिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)	1.रीतिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. रीतिकालीन प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे। 3. रीतिकालीन सहित्य सम्बन्धी शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खंडों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खंड-अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खंड-ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2,3 एवं 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खंड-स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6, 7, 8, 9निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 15अंक का होगा।

इकाई - 1

रीतिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
रीतिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक)
रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ
रीतिकाव्य की प्रमुख धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई - 2

केशवदास – रामचन्द्रिका (संपादक – लाला भगवानदीन) – रावण–अंगद संवाद

बिहारी – बिहारी रत्नाकर (संपादक – जगन्नाथदास रत्नाकर)

1. मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
2. पाइ महावर दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।
3. नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं बिकासु इहिं काल।
4. मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि, केसरि आड़ गुरु।
5. बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन–तन माँह।
6. तंत्री–नाद, कबित्त–रस, सरस राग, रति–रंग।
7. कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
8. आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु।
9. बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद–बड़ाई पाइ।
10. इत आवति चलि जाति उत चली, छसातक हाथ।

देव

1. झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानौ।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan

2. डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव के।
3. कालिन्दी–कूल भयो अनुकूल।
4. खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बड़भाग कन्हाई।
5. जब तं कुँवर कान्ह ! रावरी कला निधान।

इकाई - 3

भूषण

1. साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
2. कामिनि कंत सों जामिनि चंद सो, दामिनि पावस मेघ घटा सों।
3. उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै पग, तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती हैं।
4. सबन के ऊपर ही ठाढ़ौ रहिबे के जोग, ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे।
5.ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

घनानन्द

1. उर–भौन में मौन को घूँघट कै दुरि बैठी बिराजति बात बनी।
2. हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
3.परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
4. अति सूधो सनेह को मारग है।
5. अंतर उदेग दाह, आँखिन प्रबाह आँसू।

आलम

1. जा थल कीन्हें बिहार अनेकन, ता थल काँकरी बैठि चुन्यौ करें।
2.चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै...
3.कंचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई...
4. चारु तमाल प्रसून लता किधौं, स्याम घटा सँग बिज्जुल गोरी।
5. गुन रूप निधान बिचित्र बधू, हित प्यारी पिया मधु गंजन की।

इकाई - 4

पद्माकर

1. कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में...
2. फाग के भीरे अभीरन ते गहि गोबिन्द लै गई भीतर गोरी।
3. देखु 'पदमाकर' गुबिंद की अमित छवि...
4.चपला चलाकैं चहूँ ओरन तें चाह–भरी
5. खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहैं भाग हमारो।

सेनापति

1. वृष कौं तरनि तेज सहसो किरन करि...
2. सारंग धुनि सुनावै घन रस बरसावै...
3. सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है...
4. कालतैं कराल कालकूट कंठ माँझ लसै...
5.कोह कौं घटाइ, लोभ मोह न मिटाइ काम...

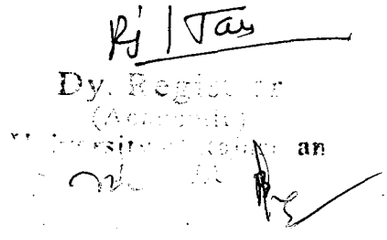

अनुशंसित ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र (संपादक), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. रीति काव्यधारा – डॉ. रामचन्द्र तिवारी (संपादक), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. बिहारी रत्नाकर – श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'(संपादक), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. रीतिकाव्य – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. हिंदी रीति साहित्य – डॉ. भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र – कथेतर गद्य विधाएँ

1 क्रेडिट 25 अंक
6 क्रेडिट 150 अंक
प्रश्न पत्र 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य की कथेतर गद्य विधाओं – नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि से अवगत कराना। 2. नाटक, एकांकी आदि कथेतर विधाओं के स्वरूप एवं उनकी विकास यात्रा से अवगत कराना। 3. नाटक, एकांकी आदि कथेतर विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं एवं रचनाकारों से परिचय कराना। 4. विद्यार्थियों में नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं के अध्ययन द्वारा संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)	1. विद्यार्थी नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं के स्वरूप व विकास से परिचित हो सकेंगे। 2. हिन्दी साहित्य की कथेतर विधाओं के अध्ययन द्वारा रचनात्मक कौशल का विकास करेंगे। 3. नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं का व्यावहारिक प्रयोग करना सीखेंगे। 4. हिंदी साहित्य की समृद्ध गद्य परंपरा से अवगत होकर विभिन्न रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 में निर्धारित पाठ से 2 गद्यांश (आन्तरिक विकल्प सहित) तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से 2 गद्यांश (एक रचना से एक, आन्तरिक विकल्प सहित) व्याख्या हेतु पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जायेगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई 1

नाटक – परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी के प्रमुख नाटक एवं नाटककार
एकांकी – परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी की प्रमुख एकांकी एवं एकांकीकार
संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, आत्मकथा का सामान्य परिचय

इकाई 2

नाटक – रक्तकमल – लक्ष्मी नारायण लाल

इकाई 3

एकांकी – उत्सर्ग – रामकुमार वर्मा
सीमा रेखा – विष्णु प्रभाकर
महाभारत की एक साँझ – भारतभूषण अग्रवाल
आत्मकथा – अपनी खबर (केवल शीर्षक अध्याय) – पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र

इकाई 4

रेखाचित्र –सरजू भैया – रामवृक्ष बेनीपुरी
संस्मरण – सुभद्रा कुमारी चौहान – महादेवी वर्मा
यात्रावृत्त – बहता पानी निर्मला – अज्ञेय
रिपोर्ताज – अदम्य जीवन – रांगेय राघव

अनुशंसित ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपादक : डॉ नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा
2. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी एकांकी – सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिन्दी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

Rj | Jay